%%A. D. 1190 ― 1435

%%or Śaka 1112 – 1357

%% p. 618

NO. 319

Lakshmī-Narasiṃha Temple at Siṃhāchalaṃ<1>

( S. I. I. Vol. VI, No. 775; A. R. No. 278-P of 1899 )

Ś. 1286

(१।) स्वस्ति श्री [।।] शकवर्षे रस-वसु-दिनकृद्सम्मिते भानुवारे

श्रावण्यां सिहशैलेमितु रवि ...

(२।) दिनं तस्य सख्यान्वितीष्यं दीनाराम ग्रंडस[ं]ज्ञान नवतमुदात्य ..

न [पात्र]वी [च]-

(३।) ंद्रदा[स]म्सकलगुणनिधिः पुरभसि[धु]र्द्विप्रानां । श्रीशकवर्षवुलु

१२८१ गुनेंटि श्रावण[पु]म(वर्ण).

(४।) म(मि)यु रविवारमुनांडु<2> कलिग परीक्ष[चां]द्रदास कंदर्प्पजीयन

तनकु नभीष्टार्त्त(र्थ)सिद्धिगानु

(५।) श्रीनरसिह्यनाथुनि श्रीभंड(डा)रमंदु पद्मनिधि गें(गं)डमाडलु

र पेटि आयुरा[रोग्याभीष्ट]-

(६।) <\*>सिद्धिग(गानु) ... रे पटि धूपअवसरमपुडु नरसिंहनाइ गोप ......

श्रीवर(रा)ह-

<1. In the nineth niche of the verandah round the central shrine of this temple.>

<2. The corresponding date is the 14th July, 1384 A. D., Sunday.>

<\* From line 6 onwards the inscription is written over an erasure.>

%%p. 619

(७।) देवरकु पेरुमांडि दिव्यवुन्नम दिव्यनिवंध १ गंगाधर शोयाजलिम‘[ड्ड]’

(८।) .. ... ... ... ...

(९।) रेड्डन्नु ... ... देन्नि मूंडु ... ... ...

(१०।) चंद्र[दा]सुन्नु दिव्यनिवंध[मु] ... इ भंडाराप्रस ... ...

(११।) ... ... ... ... ... ...